

DPN 6999

रस वैद्यक RASA VAIDYAKA

Title :

Run. No. 7724

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Medicine*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☒ New. / ☒ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms. 28.5 x 10.5

Folios *5*

Lines (in a page) *9*

Compl. / ☒ Incompl.

missing 4
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / ☒ donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place *Bhriqurama*

Script : ☒ New. / ☒ Dev. / ☒ Bhuj. / ☒ Ran. /

Illus. :

Shrestha.

Material : palmleaf / ☒ paper / thyasaphu /

Condition : fine / ☒ damaged by worms, ☒ rats, ☒ water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Reg. ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ चन्द्रवन्तराये नमः ॥

भाव शुद्धिश्च तागाश्च यथानाडी परीक्षणम् P.T. ०.

अत्युगता वधनावाने समाज सहज पित्रला ॥

१. नाडी परोक्षा

२. वैद्य कर्म

श्रीगणेशायनमः॥ गणेशसहस्रनाम हरिनामसमूहं कनदिनु लेखनकन
 विष्णुश्रीसर्वोपमाज्योत्पादिसकलगुणगणेशसमूहं
 श्रीइष्टदेवताकाश्विनतलकोटीकोटीसोपावाताउकेदयाम
 मेरुदेगतिहोगायिकाहैसबासपासुनकरुद्रासेधा
 तकरैनासायनलोपावाताउकेदयाम

श्रीगणेशायनमः

श्रीगणेशाय नमः॥ चन्द्रनाराये नमः॥ भावशुद्धिश्च नागाश्रयथा नाटिपरिष्कार
 णं॥ अतु ग्रावचनावाने समा सहजपित्तला॥१॥ तं गमाक्षय कारीव कफेनपरिष्कारिता॥
 मंदं स्पंदति आहारे कफेन सहमाश्रीता॥२॥ वदुदाद्याकराः रक्ते वातपित्तविशेषकृत॥ वा
 ते सो का कफे सो कापित्तवदति दारुणाः॥३॥ संमिश्रासन्निपाते मज्ञा तव्या नाटि कोविदैः॥
 पूर्वापतंगतिप्रभं जन्म गतिं श्लेष्मा गतिर्विभृति॥ अतं तं भ्रमणं मुहुर्विदधती फलापहर
 ती सुश्मत्त्वमातंगता॥ साध्या साध्यवृती वदंती मुचि यो नाटि गति र्गोनत॥ श्लेष्माशुक्लाक्षि
 णी ज्ञेयारक्तपित्तवलोहिता॥ रुरु नेत्रे भवेद्वा तस्वस्थे पट्टादलो यमे॥ कफे जिह्वा भवेद्बु
 ल्का आरक्ता रक्ते देषतः॥ सकृद्वा कथिता वाते संमिश्रासन्निपातके॥ कफे मुत्रं भवेद्बुल
 आरक्ते रक्तपित्ततः॥ सकृद्वा कथिता वाते संमिश्रासन्निपातके॥ श्वेतधृत्वा मूत्रं पेरि

मारुदाय
 नमः ११३

क्षये त॥ तण्णैरेलविंदुवक्तृत्वामूत्रं विनिक्षिप्ये त॥ विंदुवातसद्विष्ये त कफविंदुस्थि
 रं भवेत्॥ पित्तविंदुविशये त शीत तैल स्पलक्षीणं॥१॥ प्राची पश्चिम ईशान्याग नंतैल सुष
 प्रदं म॥ असं याम्यनेत्रात्पे वायु रग्निदिशा स्थितम्॥ कषु प्रवेदिग्भागे आग्नेयाः शो
 कदायकं॥ नेत्रात्पे मत्सु संदे हो दक्षिणे मरणं कृवं॥ पाश्चिमे व्याधिना शायवायवे वात
 को यक्त॥ उत्तरे शान्तिदं तैलं ईशानं सुषदायकं॥ भिन्नमस्तकसंकासं कालं उदं सम
 प्रभम्॥ द्विधा तत्पित्तविंदुवक्तृत्वकालेन लक्षितम्॥ अथो गक्षे घटा तैलं तदामत्पुर्न संश
 यः॥॥ इति रसवैद्य के नाट्यादि परिष्काराधिकार पंचमः॥॥ अथ वैद्यकर्मलिख्यं ते
 ॥ अथ विहरुवास्त्रपुरुषसंयोग करणं भव्य॥॥ हस्तिदंत अउला युटपा कप काकु
 तव भागि रोतिल पचवः नुसा मुडवो पीडयेतोषो इ गेषा यो मुड कुटि वालि न कलन

ति ४

॥१॥ अडला कुं कुमनि लोते लमा द्वि क वलु र्णित वस्तु मुडु पत्रो डिये तो स न व के स वाला
हुन ॥ पान कार सपा रा र स मी थ मुडु वु पडिये तो मुडा का फु व द्वा स स र्वे ॥ लो हा वु र्ण त्रि फ
ला वि जाल करे र र्णित सम करि म गिरा स र प ल नु त व मुं दं वु प र नु। से ता रो म का
ला हो ॥ दिन ॥ या व को को इ लो त्रि फ ला तिल म रिरा प द्वा त्र का फल तेल को इ लो लो
हा वु र्ण ॥ र्णित वस्तु का जि मु द्वि वु पडिये तो से ता रो म का ला हो ॥ दिन वि सर ॥ मे न ल का
फल को गुं दि का जि मि स तलो हा भा डा प ल नु। प रा द्या म प ल नु। त व से न ल ना सी दि लि नु
मुडु वु प र्ण से ता रो म का ला हो ॥ म यु री स पा भी र रा र स वृ ती स त प का व नु ॥ न स लि २
नु ॥ मु ड वु प ड नु दि व स ४० वाल का ला हुन ॥ ॥ र ति गु ला का वृ र्ण मे सा दु व ज मा व नु। से
द वि वि रो लि क न लि नु ॥ त व का न वु प ड नु ॥ का म ज र्णित व डा र्णित वा डो ॥ त ता वै डा का

वि ज के तेल का ड नु। से तेल म ग र्ण वि ष भा ग र्ण दा हा को मु त अ थ वा घो रा को त्र घालि प चा व नु
त व का न वु प ड नु ॥ का न ज र्णित व डा र्णित वा ड नु। से ता सी र्ण वि वि ह का फल रो हु मा द्वा के
पित्त। ग र्ण को मा सु। र्णित वस्तु वृ र्ण ग नु। मे स न वी न म र्ण न ग नु। स्त नी ल ग वा डे ॥ म ह कु वि
ला अ पा म र्ण से ता सी र्ण उ वि ह का फल पि प ला ॥ अ स्व र्ण चा सि धो म र्व कु ढ सु र मा सा ॥ र्णित व
स्तु स म ग र्ण ले प क र नु ॥ स्त नी ल ग वा डे ॥ म ला यो वि ह का फल दा डि म का द्वा ला ॥ र्णित मे
ला र्ण सी र्ण उ का तेल प चा व नु ॥ नि त्प ला र्ण य त घो रा का ज सी लिंग हो ॥ प द्वा द्वा का पा त म ला यो
व जो अ स्व र्ण व ग जी पि प ल का लो लु ना वे ड ॥ र्णित वस्तु को म स्म क र नु ॥ पा का वि ह का र
स प ल नु ॥ मे स गो व र के र स घाल नु ॥ त व लिंग ले प ग नु ॥ ॥ अ त्रि वं व ल सु मि हो त न
स्को द र्ण ह रे ॥ सि वाल सु र को मा सु सु र वृ र्ण ग नु ॥ मे स वृ त म द्वि म र्ण न ग नु ॥ त रु ण घो

२०
 २
 १३
 र काजसातेजहो ॥ विहि काफल मलाये प द्यक्ष कापा तिसिखोसिवाल ॥ सति सम
 करि चूर्णगर्ण ॥ मेसिन वनिमिफु ॥ नवलिंगलेप गर्नु ॥ लिंग स्थूल होइ ॥ कुठ वजो न
 गवलने सीको न वनी ॥ सति सम गरि चूर्ण पडिय तोस्तन सारा हुन ॥ मनोहर नि कगाइ दत्त मे
 सी दत्त करुवातेल का गुनिक जुडी ॥ हाथा जोडि वजो हले दो कडुकि ॥ सति सम करि पचावनु
 ॥ तव खन मर्दन गर्नु ॥ सारा गा ठा हुन ॥ मनोहर नि का जाइ फल मा जु फल गाइ दत्त ॥ सति व
 स्तु मर्दन गर्नु ॥ सारा हुन ॥ मनोहर नि का काला तिल से ता सीस ॥ कालोजि रो से तो जिरो ॥
 सति मिसिस म करि षर्लनु ॥ तव व्यासि वेर मुषलेप गर्नु मुष का चाया जानु ॥ इन्द्रा शीत को ज
 रो वाकि को दुधा पिनि कत व्यासि वेर मुषलेप गर्नु ॥ चाया जानु ॥ पुनर्नवा को जडो भंजी रा
 ज को रस द्वालिपननु ॥ व्यासि वेर मुषलेप करनु ॥ मुष का चाया जानु ॥ रपा ॥ घुरा रंग मेसि

१०
 ५
 बाउ नलाजे ॥ रस पुषाना मवोषधि ॥ वाहा विज करि वाचनु ॥ सामुद्र आउ दो ठले ॥ ॥ इति को
 तोह माधिका रपे चमो ध्यायः ॥ ॥ अथ श्रोतां जन ॥ सवर को मासु दुमिनि का फुलु सि सारंग
 तावो पितल रूपो सुन ॥ सति काध नुपुर्षु अदृष्ट होइ ॥ कुरस ग्लनी इ काले चादि ये नि चार से
 दोडि को वाहि ये ॥ तस कुरमान स को मासु पानी दनु ॥ तवा विष्ट पधालिलनु ॥ पुष्प नक्षत्र
 अंजन गर्नु ॥ पुष अद्रिष्ट होइ का गन्धु मिदुलानि तर रह दो पाइय नती स्की विष्टा क कारुवमिसि
 मास का कपाल का जल पानी ॥ तव अंजन गर्नु ॥ पुष अद्रिष्ट होइ ॥ पुरे वा कापेट नि तर द्वालि मास
 को मसा उप वाचनु ॥ तव काला वि राला को वसे लोह रु जा वनु ॥ श्रोतां जन काइनेत्र अंजन ग
 र्नु ॥ पुष अद्रिष्ट होइ ॥ ॥ कुरस लूर कालो होइ ॥ मुष से तोडि को होइ ॥ जव कुरसुत नवरुजि मा
 रि आनि पुष्प नक्षत्र वडि को रद्दा पास का वनु ॥ कालि मेडि को उ न को दंदा पागे गरि विज गरि ग

लावाधनु॥ पुष्य अडिष्ट होश॥ इति नष्ट द्वाया विचित्र यमो ध्यायः॥ का क के के ले जो काटि द्युत
 प वा वनु सु का वनु॥ तव आषा अं जन गनु॥ भूमि नदी किनिधि वेधिये॥ स्थल को आषा काटि
 पूर्ण गनु॥ तव आषा अं जन गनु रात्रि वहुत भूमि देषिये॥ आ पु चिरो होश॥ यता ज्या मा गिये
 त्या पार्ये॥ इ वर का आषा काटि पूर्ण गनु॥ तव आषा अं जन गनु॥ ष रा अं च्या रा वस्तु धिये॥
 नाग के के ले जो जिह्वा का के ले जो पित्त॥ तव वारि वस्तु पिनि वाति गनु॥ तव रात्रि सवे वस्तु
 देषिये॥ की डा के भस्म गनु॥ हरि न के त बालि पि ननु॥ क प ह्री न गनु॥ तव मद मि सनु
 तव द्युत प वा वनु॥ सो द्युत को न बालि यत सुति रह्य निद्रा माहा कान सनि य॥ ॥
 इति निधि नादि दर्शना मस प्रमो पारि देद॥ परे वा कि वि वि यमो र कि वि वि यगा दल कि वि वि
 ॥ शत एक की र चूप रनु॥ ष रा गढालो हा का नेल भाजे॥ पुष्य मुक्त होश॥ कु कडा का प गमा

र का प गु सा तो ये क॥ म सा न मा हा गा उनु तव काटि पि ननु॥ तव लो हा नेल चूप रनु॥ लो हा का
 नेल फु के पुष्य मुक्त होश॥ ला जालु के जडो स वां गि के जडो भे गु ता के वसे॥ इति पि सि दु दु हा
 त मा जनु॥ ता तो तेल लो हो ये त के नडा डे॥ पुत्र नक्षत्र का कजं वा के जडो आनि सर्व गनु पनु॥
 अग्नि प्रवेश नाम होत नडा डे॥ पुष्य नक्षत्र वि या र गा र के बाढे॥ तस्का मल कु चिला दुइ व
 स्त के गो डि का गनु॥ तव षा नु॥ तव पा से वि स षा र य तो॥ विष ला गे॥ पि प लि मल मारि च॥ दुइ व
 स्त के गो डि का गनु॥ तव वा र नि ग ल नु॥ तव आदि त दुल ना मदि व्य हा र तो॥ दि वि ल सु के॥ ॥
 चषे वाना म च होत स्का गुं ड गा उनु गा वनु जो उ भो व है॥ सो आनि अक्षु किरा सि नि तर रा प
 नु॥ कति पा र य तो ने वि ये ना॥ ॥ इति निधि न्या दि वि धि अ य मो ले षा वि धि ॥ कमल का
 काटि सालि का चा वल वा का का दु धा पि र प का वनु॥ तव दि न वा हु भु ष न ला गा॥ जमु ना का

विजदुरिका विजसर्सउ काविजसर्सज नकोविज ^{सुहिंजन} ॥ **यति वस्तुवर्णगीरषाढादिनपंचम पनलागे** ॥
 पिपलकापात कुंकुममारिचचितो गजपिपलिंगाढाम गकासिर अगार कस्तुरि ॥ **यति वस्तुपाप**
 निपिनिशारि मई नगर्तु ॥ **हिउद जाडो न होश ॥ वर्षा घाम न होश ॥ इति शिप्रति तन वना व्यास ॥**
 ॥ मयुर किस कायं केल कुंकुम शंख पीवहु कौतिसर्पा को नल इन ववो षधिचिगुण भनि
 जे ॥ **इति वेषव वाहु विजकारि वाधियत ॥ वाघ चोर राजा को भय न होश ॥ अघो राखुलि ॥**
 पारस सीवष भाग शिर्हा विभाग ४ हरिताल भाग ५ **सोठ भाग ६ मरिच भाग ७ पिपला भाग ८ हडा**
 भाग ९ वरडा भाग १० **अबला भाग ११ कनषार भाग १२ अजैपाल भाग १३ मंगिरा ज रस भाग १४**
 ॥ **यति वेषव वंचनु वरिचौ स विरोग वा युह रै दोखुलि ॥ अघो राखुलि वरिचुपासा ॥** ॥ **सि**
 ताजिरा मास शंगोलि शिदि न गिजे तौ रक्त आउ जाइ ॥ अरिउ का तेल मासारंगालि **हरिदिन शदिजे**